अव्यक्त पालना का रिटर्न

तीन प्रकार के पुरूषार्थी। लक्ष्य और लक्षणों में अन्तर का कारण

बाबा कहते है लक्ष्य सब का बहुत ऊँचा है लेकिन लक्षण धारण करने में तीन प्रकार के पुरुषार्थी हैं।

1 एक हैं – जिन्हें सुन कर अच्छा लगता है, करना चाहिए, लेकिन सुनना आता है पर करना नहीं आता है।

2 दूसरे हैं – जो सोचते हैं, समझते भी हैं, करते भी हैं। लेकिन शक्ति–स्वरूप न होने के कारण डबल पार्ट बजाते हैं। अभी–अभी ब्राह्मण, तीव्र पुरुषार्थी अभी–अभी हिम्मतहीन।

3 तीसरे हैं – जो सुनना, सोचना और करना, तीनों को समान करते हुए चलते हैं। ऐसी आत्माओं का लक्ष्य और लक्षण ९९: समान दिखाई पड़ता है।

बापदादा कहते– लक्ष्य और लक्षणों में अन्तर के कारण है– पांच विकार और प्रकृति के तत्व, दोनों में से किसी न किसी के वशीभूत हो जाते हैं। इसलिए लक्ष्य और लक्षण में अन्तर पड़ जाता है।

10.01.77

BRAHMAKUMARIS DIAMOND HALL

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न :

मीठे बाबा, किस एक विशेष बात का आश्चर्य लगता है? और क्यों?

उत्तर :

मीठे बच्चे, बापदादा को विशेष आश्चर्य एक बात का लगता है, कि -

मास्टर सर्वशक्तिवान, श्रेष्ठ तकदीरवान, छोटी-छोटी उलझनों में कैसे उलझ जाते हैं जैसे कि शेर चींटी से घबरा जाता है। अगर शेर कहे "मैं चीटीं को कैसे मारूं, क्या करूँ" तो क्या सोचेंगे? सम्भव बात लगेगी या असम्भव लगेगी?

ऐसे मास्टर सर्व शक्तिवान ज़रा-सी उलझन में उलझ जाएं तो क्या बाप को सम्भव बात लगेगी या आश्चर्य की बात लगेगी?

क्योंकि अब छोटी-छोटी उलझनों से घबराने का समय नहीं है, अब तो सर्व उलझी हुई आत्माओं को निकालने का समय है। ये बचपन की बातें हैं। मास्टर रचयिता के लिए यह बचपन की बातें शोभती नहीं।

10.01.77

मन की बात... बापदादा के साथ

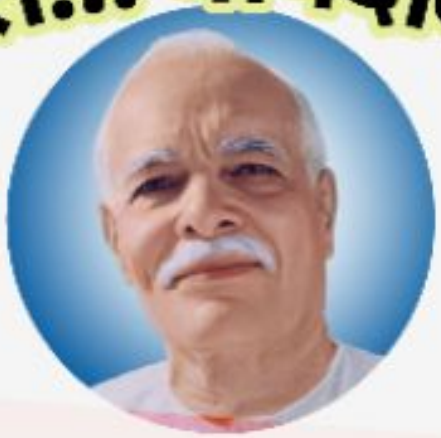

मैं आत्मा :-

प्यारे बाबा, रॉयल फैमिली के बच्चों की विशेषता क्या है और कमी को खत्म करने की समझानी बतायें ?

बापदादा :- मीठे बच्चे,

- जो रॉयल फैमली (ROYAL Family;उच्च परिवार) के बच्चे होते हैं वह कब धरती पर, मिट्टी पर पांव नहीं रखेंगे।
- संकल्प से भी देहाभिमान में आए अर्थात् मिट्टी में पांव रखा। वाचा, कर्मणा में आना अर्थात् मिट्टी खा ली।
- रॉयल फैमली के बच्चे कभी मिट्टी नहीं खाते। सदा स्मृति में रहो कि ऊँचे से ऊँचे बाप के ऊँची स्टेज वाले बच्चे हैं तो नीचे नज़र नहीं आएगी।

और प्यारे बच्चे,

- कमी को बार-बार सोचने से कमी रह जाती है। कमी को देखते खत्म करते जाओ। चैक करने के साथ-साथ चेंज भी करो
- अपने को सदा गुणमूर्त्त देखते ऊँची स्टेज पर स्थित रहते रहो। नीचे नहीं आओ।

10.01.77

10-1-72 अव्यक्त वाणी का

मुख्य बिंदु

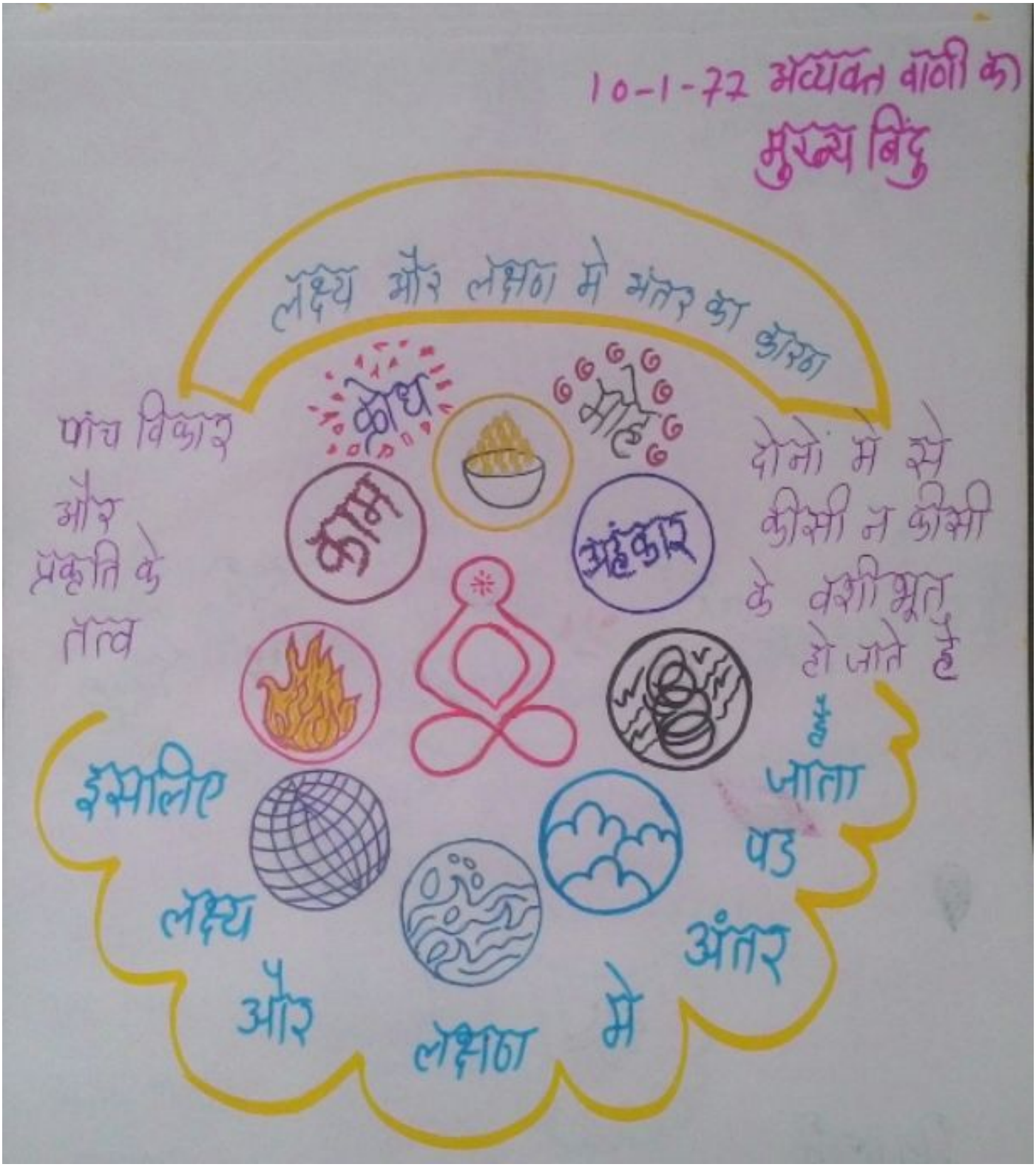

10-01-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं मधुबन निवासी हूँ।

मधुबन निवासी अर्थात् सदा ड्रामा के राज़ को और तीनों कालों को जानने वाली। सदा राज़ी और खुश रहने वाली।

10-01-77

जैसा लक्ष्य वैसा लक्षण

लक्षण धारण करने में तीन प्रकार के पुरूषार्थी :-

1

जिन्हें सुन कर अच्छा लगता है, करना चाहिए, लेकिन सुनना आता है पर करना नहीं आता है।

2

जो सोचते हैं, समझते हैं, करते भी हैं। लेकिन शक्ति-स्वरूप न होने के कारण डबल पार्ट बजाते हैं। अभी-अभी ब्राह्मण, तीव्र पुरूषार्थी अभी-अभी हिम्मतहीन। कारण? पांच विकार और प्रकृति के तत्व, दोनों में से किसी न किसी के वशीभूत होजाते हैं। इसलिए लक्ष्य और लक्षण में अन्तर पड़ जाता है।

3

जो सुनना, सोचना और करना, तीनों को समान करते हुए चलते हैं। ऐसी आत्माओं का लक्ष्य और लक्षण ११% समान दिखाई पड़ता है। ऐसे तीन प्रकार के पुरूषार्थी देख रहे हैं।